आज़ाद फाउण्डेशन

आज़ाद परिंदे

न्यूज़लेटर (सीमित वितरण हेतु) आज़ाद फाउण्डेशन, वर्ष 2022 अंक 20

समानता और आज़ादी ज़िंदाबाद!

नमस्कार साथियों!
इस बार के आज़ाद परिंदे के अंक के माध्यम से सही मायने में हमारे जीवन में 'आज़ादी का क्या अर्थ है' इस सवाल से हमे रूबरू होने का अवसर मिला है।

अगर हम बराबरी पर आधारित समाज की बात करते हैं तो यह बात सच है कि हर किसी के लिए 'समाज के अनुसार खुद को न बदलने की आज़ादी' ही असली आज़ादी है। हमारा संविधान हम सभी नागरिकों को स्वतंत्र रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करने, कहीं भी आने–जाने, अपनी पसंद का रोज़गार चुनने एवं सम्मान के साथ जीवन जीने की आज़ादी देता है। परन्तु, आज भी कई हद तक हमारा समाज लिंग, जाति, गरीबी, धर्म, परंपरा और रीति–रिवाजो की बेड़ियों में बंधा हुआ है, जिसे हम सब किसी न किसी स्वरुप में अनुभव करते रहते हैं।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे 5 (NFHS–5) में साफ दिखता है कि 18–49 वर्ष की आयु के बीच की 44.5% विवाहित महिलाओं ने हिंसा का सामना किया है। महिला श्रम बल की भागीदारी केवल 18 प्रतिशत है जिसका एक मुख्य कारण है गैर बराबरी पर आधारित अवैतनिक घरेलू एवं देखभाल के काम का बंटवारा। औसतन, महिलाएं 4 घंटे से अधिक समय घरेलू एवं देखभाल के काम में खर्च करती हैं जबकि, पुरुष केवल 40 मिनट का समय देते हैं। आज भी महिलाओं के पास अपने समय को अपनी पसंद, अपने आराम, या कुछ नया सीखने में खर्च करने की आज़ादी नहीं है। साथ ही जो व्यक्ति किसी अन्य जेंडर से अपनी पहचान करते हैं, उन्हें भी अपनी पहचान और भावनाओं के अनुसार जीने की आज़ादी नहीं है। हमारे समाज में कई ऐसी परम्पराएं, त्यौहार व नियम हैं जो महिलाओं पर रक्षा के नाम पर अकेले बाहर आने–जाने पर पाबंदी लगाते हैं, उनको अपनी पसंद का रोज़गार चुनने से रोकते हैं और उनकी पसंद के अनुसार अपना जीवन साथी चुनने का अवसर नहीं देते। आज भी देश के कई इलाकों में महिलाओं के मंदिर में प्रवेश करने तक पर पाबंदी है। इसी दिशा में आज़ाद में हम संसाधन विहीन महिलाओं को अपने घर से बाहर निकल कर अपने सपनों को पूरा करने के लिए "विमेन विद व्हील्स" कार्यक्रम में गैर परम्परागत रोज़गार से जोड़ने का काम कर रहे हैं। जिससे वह सामाजिक एवं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनें। ऐसे ही, हमारे आज़ाद किशोरी कार्यक्रम से जुडी किशोरियों ने उच्च शिक्षा के लिए इंडस्ट्रियल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट (ITI) कोर्स में एडमिशन लेकर अपनी आज़ादी को प्राप्त करने की ओर कदम उठाये हैं।

पिछले कुछ वर्षों से आज़ाद में हम सभी "रक्षा बंधन" के त्यौहार को एक नए तरीके से समानता के त्यौहार की तरह मना रहे हैं। इसमें हम सबने मिलकर बहन को रक्षा का वादा नहीं बल्कि, बराबरी के अवसर और समान अधिकार दिलाने में सहयोग का वादा किया है और परिवार में बराबरी पर आधारित रिश्तों की पैरवी की है। इसमें, युवा लड़के एवं पुरुष भी समाज द्वारा स्थापित जेंडर भूमिकाओं से बाहर निकल कर, खुद को महिलाओं का संरक्षक न मानकर एवं समाज द्वारा दिए गए विशेषाधिकारों को छोड़कर समानता की राह पर चल रहे हैं। वे घर के कार्यों में भागीदारी एवं हिंसा को रोकने के लिए सुदृढ़ प्रयास कर रहे हैं।

समाज द्वारा तय किये गये असली मर्द होने के कुछ पैमाने हैं, जिसको पाने की दौड़ में हम स्वतन्त्र होकर भी झूठी मर्दानगी के बंधनों में कैद हैं। पुरुषों का अपने बच्चों को खुल कर प्यार कर पाना एवं देखभाल के कार्यों में उनकी भागीदारी होना ही सच्ची आज़ादी है। एक समानतापूर्ण समाज बनाने के लिए ज़रूरी है कि जाति, धर्म, लिंग, आदि के आधार पर कोई भेदभाव व हिंसा न हो।

आज भी हम आज़ादी की बात करते हैं तो मुझे प्रसिद्ध नारीवादी कार्यकर्ता कमला भसीन की कविता का स्मरण होता है, जिसके शब्द कुछ इस तरह हैं:

मेरी बहने मांगे- आज़ादी,
हिंसा से, पितृसत्ता से, जातिवाद से - आज़ादी,
नारी का नारा- आज़ादी

हमारा संविधान महिलाओं को अपने शरीर से जुड़े फैसले लेने का अधिकार देता है। उनको बच्चे पैदा करने हैं या नहीं, किसके साथ करने हैं, कितने बच्चे पैदा करने हैं या उनके गर्भ के भ्रूण को वो जन्म देना चाहती हैं या नहीं, वह उनके स्वयं का निर्णय होना उनका एक मौलिक अधिकार है। लेकिन क्या महिलाएं इसका या अपने बाकी कई अधिकारों का प्रयोग कर पाती हैं? इसके लिए अभी जागरूकता एवं लिंग–न्यायपूर्ण दृष्टिकोण से काम करने की ज़रुरत है। एक महिला तब तक आज़ाद नहीं हो सकती जब तक परिवार, निजी संपत्ति और स्टेट की शक्ति को ढहाया नहीं जाएगा और इसके लिए हम सबको एकजुट होना होगा।

आइये, आज़ाद परिंदे के इस अंक में देखें कि आज़ाद परिवार के लिए सच्ची आज़ादी क्या है...

• हरि शर्मा, स्पेशलिस्ट, मेन फॉर जेंडर जस्टिस प्रोग्राम

सच्ची स्वतंत्रता क्या है?

मेरे लिए, सही मायने में आज़ादी का मतलब है सच को स्वीकार करना। हम जैसे हैं, वैसे ही दूसरों के सामने बिना डरे खुद को प्रस्तुत करें।

हमें किसी भी प्रकार का दबाव महसूस नहीं होना चाहिए। हम अपने मन की बात बिना डर के आज़ादी से बोल सकें, यही सच्ची स्वतंत्रता है।

• दिलीप, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, जयपुर

हल सिर्फ जेंडर इक्वलिटी है...

तुमने कहा था हम एक ही हैं,
तो अपने बराबर कर दो ना।
नैपी जब मैं बदलती हूँ,
तुम दूध की बोतल भर दो ना।
बस यूँ ही एक हैं कहकर कहाँ ज़िंदगी चलती है?
कभी तुम भी सर दबा दो मेरा, ये भी कमी खलती है।
जब मैं भी ऑफिस जाऊं,
तुम भी घर संवार दो ना।
तुमने कहा था हम एक ही हैं,
तो अपने बराबर कर दो ना।

तुम क्रिकेट भी अपना देखो,
तो मैं भी सीरियल अपना लगाऊं
तुम थोड़ा हाथ बटा देना,
जब मैं किचन में जाउं।
सब साथ मिलकर करने की, हममें यही तो एक क्वालिटी है
हम साथ खड़े हैं एक-दूजे के, हल सिर्फ जेंडर इक्वलिटी है

तुम भी नए से हो जाओ अब,
और नई सी मुझको उम्र दो ना।
तुमने कहा था हम एक ही हैं,
तो यूँ ही जीवन बसर हो ना।
तुमने कहा था हम एक ही हैं,
तो अपने बराबर कर दो ना।

• काजल, फेमिनिस्ट लीडर, ईस्ट दिल्ली

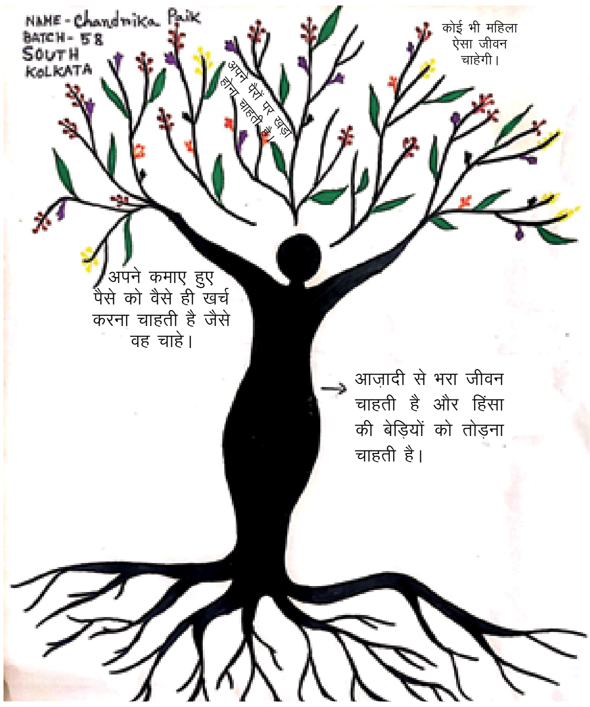

चंद्रिका पैक, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

उलझन से आज़ादी

मैं अपने परिवार से अपनी पसंद के कपडे पहनने की आज़ादी चाहती हूँ। मैं हमेशा से सूट पहनती हूँ, लेकिन जबसे मैं ट्रेनिंग से जुडी हूँ मुझे सूट पहनने में दिक्कत महसूस होती है। मैं जीन्स–टॉप पहनना चाहती हूँ जिससे मुझे बस में सफर करते समय या ड्राइविंग करते समय कोई उलझन महसूस न हो। और मैं जहाँ भी जाऊं, कपड़ों को लेकर बेफिक्र रहूं।

• रुखसाना, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

काम में समानता...

मुझे समानता काम में चाहिए, फिर चाहे वो ऑफिस का काम हो या घर का। कई जगह पर महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कमज़ोर समझा जाता है। उनका मानना है कि महिलाएं हार्डवर्क नहीं कर सकती हैं, जिस कारण उन्हें कम सैलरी या ओवर टाइम दिया जाता है। मुझे अपने भाई के साथ भी समानता चाहिए। वो अगर बाहर काम करते हैं, तो घर का कुछ भी काम नहीं करते। जबकि, मैं बाहर के साथ–साथ घर का भी सारा काम करती हूँ। मैं चाहती हूँ कि वो काम में मेरा हाथ बटाएं, और घर में समानता लाएं।

• अल्का, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

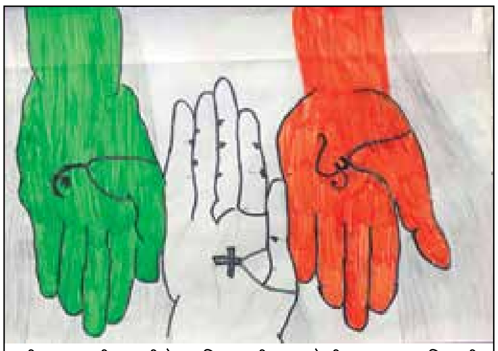

सीमा परवीन, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

फलक खातून, आजाद किशोरी लीडर, साउथ कोलकाता

समानता

समानता तब होगी जब सभी लोग समान अधिकार का लाभ उठा पाएं। समानता का अर्थ है सभी लोगों से एक जैसा व्यवहार करना चाहे वो किसी भी धर्म, जाति, रंग, वर्ग, लिंग या शारीरिक संरचना के क्यों न हो।

• पूजा, फेमिनिस्ट लीडर, जयपुर

हम भी आगे बढ़ना चाहती हैं...

आज़ादी का मतलब है कि किसी भी लड़की पर कोई बंधन ना लगाए जाएं। चाहे किसी भी फील्ड में नौकरी करने का फैसला हो या अपना जीवनसाथी चुनने का, हर लड़की ये फैसला आज़ादी से ले सके। जिस तरह से हमारा परिवार और समाज लड़कों को पूरी आज़ादी से जीने की छूट देता है, वही आज़ादी लड़कियों को भी दी जानी चाहिए। हम लड़कियां भी तो आगे बढ़ना चाहती हैं, और ज़िन्दगी में कुछ कर दिखाना चाहती हैं।

• रूपा, फेमिनिस्ट लीडर, ईस्ट दिल्ली

भेदभाव से आज़ादी

आज़ादी का मतलब है किसी के साथ भेद–भाव न करना। कुछ लोग कहते हैं कि लड़कियों को ड्राइविंग नहीं करनी चाहिए। लेकिन लड़कियां ड्राइविंग कर सकती हैं, घर भी चला सकती हैं और आत्मनिर्भर भी बन सकती हैं। लड़कियां वो हर काम कर सकती हैं जिसे लोग कहते हैं कि वो नहीं कर सकतीं, जैसे वकालत, ड्राइविंग, नाईट ड्यूटी, आदि।

• आकाश, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, साउथ दिल्ली

जीवन जिऊँ अपनी शर्तों पर

मेरे लिए आज़ादी का मतलब यह है कि मैं जीवन अपने मुताबिक जिऊँ। मैं अपने जीवन में किसी भी प्रकार की दखल अंदाज़ी नहीं चाहती, चाहे वो घूमने–फिरने का निर्णय हो या शादी का।

• रितिका, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

असमानता को करो बाहर,
समानता से ही करो प्यार।
समानता है हम सबका अधिकार।

• साक्षी, आज़ाद किशोरी लीडर, ईस्ट दिल्ली

सुरक्षित महसूस करने की आज़ादी

मैं एक साधारण सी लड़की हूँ जिसे अपने घर में तो आज़ादी मिलती है, जैसे, खुद फैसले लेना, रात को बाहर जाना, लड़के–लड़की में अंतर न करना और अपनी मर्ज़ी के कपडे पहनना। परन्तु, इस समाज की नज़रों से मैं आज़ाद नहीं हूँ। यदि मैं कहीं भी रात या दिन में बाहर जाती हूँ तो खुद को सुरक्षित महसूस नहीं करती। हमारे समाज में लड़कियों व महिलाओं के साथ बहुत दुर्व्यवहार किया जाता है। लड़कियों को समाज में वस्तु के समान देखा जाता है। मेरे लिए सच्ची आज़ादी तब होगी जब मैं बिना डर, घर के बाहर पैर रख सकूँ।

• रिंकी राठौड, आज़ाद किशोरी लीडर, जयपुर

अनेक रंगो का देश-भारत

सभी को समान नज़र से देखना, जिसमें जाति, धर्म, पंथ, राज्य, भाषा, लिंग या रंग किसी प्रकार का भेद नहीं किया जाए, यही आज़ादी है। विश्व में समानता का स्वरुप अगर किसी देश में देखने को मिलता है तो वह भारत ही है जहाँ सांस्कृतिक, रहन–सहन, बोली, पहनावा, आदि, तमाम विविधताओं के बाद भी सभी मिलकर एक परिवार की तरह जीवन बिताते हैं।

• विकास कुमार, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, साउथ दिल्ली

शायद कमज़ोर थी मैं, लेकिन अब न रहूंगी
अपने हक़ के लिए उन सब से लड़ूंगी।
न रहना धोके में कि मैं कोमलतापूर्ण नारी हूँ,
याद रखना कि मैं अब कठोरता की सवारी हूँ।

• ऐश्वर्या, आज़ाद किशोरी लीडर, जयपुर

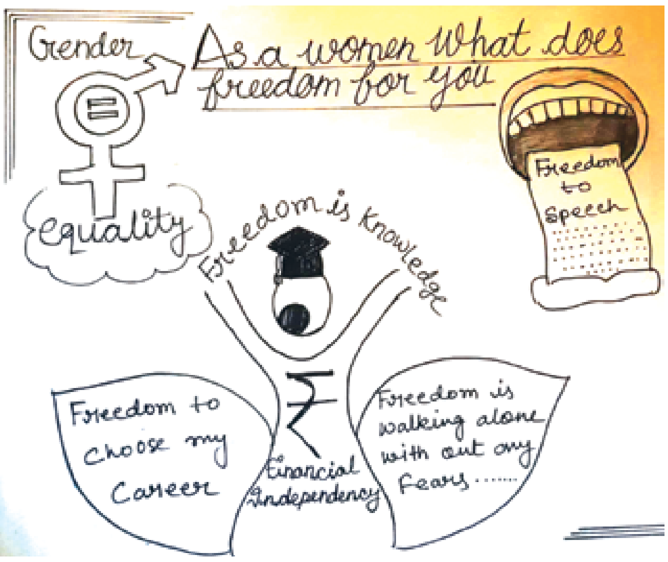

सरबानी घोषाल, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ कोलकाता

हिमांशु, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, साउथ दिल्ली

भारत की जान है नारी, भारत का सम्मान है नारी।
आज़ादी के पूर्व बंधन में थी नारी, आज़ादी के बाद निडर है नारी।

• राधा, आज़ाद किशोरी लीडर, जयपुर

आज़ाद है मुल्क मगर लड़कियां आज़ाद न हो पाई

आज़ाद है मुल्क मगर लड़कियां आज़ाद न हो पाई
आज भी आज़ादी बंधन में ही मनाई है
काहे की आज़ादी हमारे लिए जब
खुद की पसंद के कपड़े पहनने पर भी मनाही है?

सोच को बांधा है समाज की डोर ने
छोटे कपड़ों में दिखती जिसे खोट है।
खोकले हैं समाज के ये चोंचले,
जब दिल चाहे किसी को भी टोक ले।
यह मत करो। वो मत करो।
ऐसा बोलने वाले, तुम्हारे दिमाग में मोच है।
लड़कियों के कपड़ों से छोटी तुम्हारी खुद की सोच है।

• रेखा, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

हम अपनी आज़ादी की संरचना खुद करना चाहते हैं...

हम अब तक दूसरों की सुनते थे,
जिससे दूसरे खुश हों वही काम करते थे।
हम एक पिंजरे के कैदी थे।

पर अब,
हम अपनी आज़ादी की संरचना खुद करना चाहते हैं।
अपना निर्णय खुद लेना चाहते हैं।
अपना करियर खुद चुनना चाहते हैं।
खुद की पसंद का लाइफस्टाइल जीना चाहते हैं।
हमें कोई जज न करे,
हमें घूमने की आज़ादी मिले,
कुछ भी खेलने की आज़ादी मिले।
हम अपनी आज़ादी की संरचना खुद करना चाहते हैं।

• भूमि शॉ, आज़ाद किशोरी लीडर, साउथ कोलकाता

हम जिएं निडर

मेरे लिए आज़ादी घूमना–फिरना या अच्छे कपडे पहनना नहीं है। आज़ादी का अर्थ है अपनी बात दूसरों के सामने बिना डर के रख पाना। आज़ाद में आने के बाद मैंने अपने अधिकारों को जाना। अब ऐसा लगता है कि अपनी पसंद का काम करने की, सम्मान से जीवन जीने की, गलत को गलत कहने की आज़ादी अगर न हो, तो आज़ादी का कोई महत्त्व नहीं है। आज़ाद में आकर मैंने अपने अंदर के डर को ख़त्म करना सीखा। क्यूंकि जहाँ डर ख़त्म होता है वहीं से जीवन की नयी शुरुआत होती है।

• सीमा परवीन, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

समान अवसर का अधिकार

हम जानते हैं कि हमारे देश को आज़ाद हुए 75 वर्ष पूरे हो गए हैं परन्तु लोगों के मन में अभी भी सही मायने में स्वतंत्रता की भावना नहीं आयी है। लोग अभी भी दूसरे को कमज़ोर मानते हैं। एक ऊँची जाति का व्यक्ति अपने से कम जाति के लोगों को कमज़ोर मानता है, पुरुष महिला को कमज़ोर मानता है। इस सोच को बदला जाना चाहिए। उन्हें बताना चाहिए कि महिला कमज़ोर नहीं है। महिला भी पुरुष के कंधे से कन्धा मिलाकर चल सकती है, उन्हें भी सही मायने में स्वतंत्रता से जीने का हक़ है। उन्हें समान अवसर प्रदान करने चाहिए।

• उमेरा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

क्या हम आज़ाद हैं ?

भारत एक आज़ाद देश है, यह बात सबको पता है। लेकिन, क्या भारत सही मायनो में आज़ाद है ?

नहीं, क्योंकि किसी देश का संविधान बनाने या लोगों द्वारा नेता चुने जाने को ही आज़ादी नहीं कहते। आज़ादी सही मायनो में तब मिलती है जब सामाजिक विकारों से मुक्ति मिले। जैसे, महिलाओं को समान अधिकार मिले और दलितों को समाज में समानता मिले।

आज आज़ादी के 75 साल बाद भी महिलाओं को समान अवसर और वेतन नहीं मिलते। हमें युवाओं को जागरूक करना होगा, तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ियों में बदलाव ला सकेंगे।

• दीपक, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, नार्थ दिल्ली

महिलाओं की प्रगति - देश की प्रगति

नहीं! नहीं! महिलाओं को गुलामी की जिंदगी नहीं चाहिए, महिलाएं पुरुषों से कम नहीं ।

सिर्फ देश का विकास जरूरी नहीं, महिलाओं की प्रगति, उनकी आज़ादी भी जरूरी है।

• पवित्रा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

संतोष, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

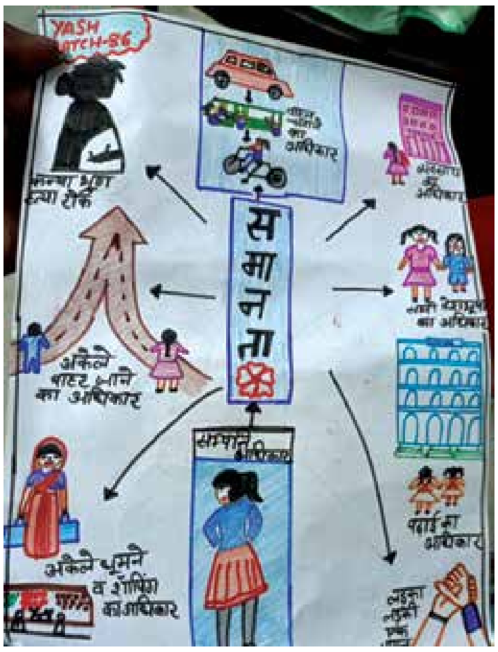

यश, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

आज भी कर रहे हैं आज़ादी का संघर्ष

स्वतंत्रता शब्द सुनना या लिखना आसान है लेकिन वास्तविक जीवन में इसे प्राप्त करना उतना ही मुश्किल है। इसलिए, आज़ादी के 75 साल बाद भी हम भारतीय निर्भरता की जंजीर में बंधे हैं। प्यासा व्यक्ति पानी के लिए तरसता है, और हम महिलाएं (और कुछ पुरुष भी) अपने साधारण दैनिक जीवन में स्वतंत्रता के लिए ललक और संघर्ष करते हैं। महिलाएं सभी जीवन और शक्ति की निर्माता हैं–फिर भी वे सबसे अधिक उपेक्षित और उत्पीड़ित हैं। कुल मिलाकर, भले ही महिला शिक्षा का मुद्दा आज के समाज और दुनिया की चिंता का विषय है, लेकिन महिलाओं की सम्पूर्ण स्वतंत्रता के बारे में उनका कितना सरोकार है, यह सवाल का विषय है। एक स्वतंत्र देश में भी, हम महिलाएं अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करने और उसका आनंद लेने के लिए निजी और सार्वजनिक क्षेत्र में कड़ा संघर्ष कर रही हैं।

• रिमिता मोइत्रा साहू, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

गुनगुन, आज़ाद किशोरी लीडर, ईस्ट दिल्ली

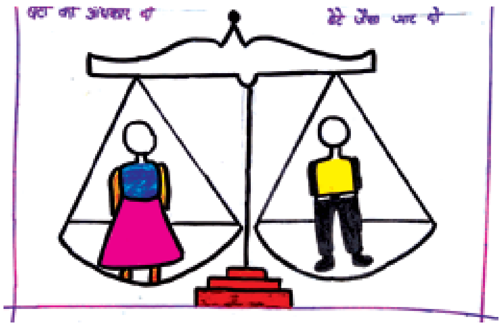

अलीशा, आज़ाद किशोरी लीडर, ईस्ट दिल्ली

सोनाली यादव, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

हम नयी परंपरा बनाएँगे

रक्षाबंधन पर भाई को राखी बांधते हैं। यह एक धार्मिक, परम्परागत बंधन है जिसे बहनों को अपनाना पड़ता है। लेकिन इस परंपरा के साथ कई बंदिशे भी जुडी हैं। हमें अगर मौका मिले तो हम इस परंपरा को नयी तरह से मनाएंगे, जिसमे घर की बंदिशों से आज़ादी होगी और रोक टोक का अभाव होगा। हम आज़ादी से अपनी ज़िन्दगी जीने में सक्षम होंगे। सपने देखेंगे तथा उन्हें पूरा करेंगे। और हम अपनी रक्षा खुद करेंगे। हम इसे समानता बंधन की तरह मनाएंगे और पितृसत्ता को चुनौती देंगे जिससे हमें:

1. अपने अनुसार अपनी ख्वाहिशों को पूरा करने की आज़ादी मिले
2. बाहर जाकर घूमने–फिरने की आज़ादी मिले
3. अपनी इच्छा अनुसार कपड़े पहनने की आज़ादी मिले
4. जॉब करने की आज़ादी मिले और
5. गैर परम्परागत व्यवसाय अपनाने की आज़ादी मिले

• सोनम, टीना, दीप्ती, शिवानी, पूनम, रीता, फेमिनिस्ट लीडर्स, नार्थ दिल्ली

बन खुद का सहारा

मैं सच कहूं तो मुझे रक्षा बंधन के नाम पर सिक्योरिटी गार्ड नहीं चाहिए। मेरी रक्षा के नाम पर मुझे बाहर जाने से कोई रोके, मुझे हर बात पर टोके, मेरी रक्षा के लिए मेरे आगे–पीछे चले, मुझे ये नहीं चाहिए क्यूंकि मैं अपनी रक्षा खुद कर सकती हूँ।

• सपना गुप्ता, MCD ड्राइवर, नार्थ दिल्ली

भाई के लिए सन्देश

मेरे भाई, मुझे पैसे न दो,
ना ही समाज को दिखाने के लिए सम्मान दो,
मुझे तो मेरे भाई बस एक चीज़ दो
जो किसी भाई ने आज से पहले किसी बहन को नहीं दी
मैं चाहती हूँ तुम मुझे समानता का अधिकार दो।

• रजनी, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

जागो नारी

मैंने बचपन से ही रक्षा बंधन न तो मनाया और न ही कभी इस त्योहार को महत्व दिया। हाँ, दिखावे के लिए या अपनी माँ का दिल रखने के लिए राखी ज़रूर बाँधी, लेकिन मेरी आत्मा अंदर से कभी ऐसे त्यौहार को मनाने के लिए गवाही नहीं देती।

जो मुझे करना है वो मैं करती हूँ और कोई मुझ पर दबाव डालता है या मुझे बातें सुनाता है तो उसका जवाब अच्छे से देती हूँ। पितृसत्ता क्या है और ये कैसे काम करती है, ये सब मैंने आज़ाद में आकर जाना। लेकिन मेरी तो बचपन से ही इन सब बातों को लेकर घर और समाज के लोगों के साथ झगड़ा व बहस होती है। मुझे इस दोगले समाज को देख कर बहुत दुःख होता है जो स्त्री और पुरुष दोनों के लिए अलग नियम बनाता है। वो सब महिलाएं जो पितृसत्ता झेल रही हैं, मैं उनसे कहना चाहती हूँ:

जागो नारी, जागो नारी
अब बनाओ पहचान न्यारी।

• ममता कश्यप, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

आर्थिक स्वतंत्रता है सच्ची स्वतंत्रता

अपने मन की करने की स्वतंत्रता और ज़िन्दगी अपने अनुसार जीने की स्वतंत्रता तभी मुमकिन है जब मैं आर्थिक रूप से स्वतंत्र हूँ। मेरे लिए, अपनी ज़िंदगी पूरी तरह से अपने दम पर जीना, अपना भरन–पोषण और समर्थन खुद करना ही सही मायने में सशक्तिकरण है। मैं चाहती हूँ कि ज़िन्दगी में बहुत मेहनत कर इज़्ज़त और पैसा कमाऊं जिसके बाद मैं कभी भी पीछे मुड़कर न देखूं।

• रानी, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

ये राखी राखी क्या है?

ये राखी राखी?
सिर्फ लड़के स्ट्रॉन्ग नहीं दुनिया में और भी हैं बाकी।
बंधवाते लड़कियों से लड़कों को राखी,
अपनी बहनो की रक्षा कर सके ताकि।
रक्षा करना सिर्फ लड़कों का फ़र्ज़ नहीं
गलत ज्ञान मत बांटो, थोड़ा सीख लो सही।
तू भाई है छोटा, और बहन तुझसे बड़ी
डर मत बेटा, तेरे पास तेरी बहन है खड़ी।
फिर आएगी वो घडी जब बनेंगी बहने बड़ी,
आँखों से पर्दा हटाओ और लड़कियों की खोलो हथकड़ी।
पहनती हैं साड़ी, ये हैं शक्ति नारी।
एक अकेली पड़ेगी सौ पर भारी
अब लड़कियां भी चलाएंगी गाडी।
इनको पीछे मत करना ये अपने घर की शान हैं,
लड़कों के साथ हिंदुस्तान की शान है।

• मोहम्मद आफताब, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, कोलकाता

रक्षा बंधन या ज़िन्दगी का बंधन ?

रक्षा बंधन के नाम पर ज़िन्दगी को बंधनों में बाँध दिया,
रक्षा के नाम पर बंदिशों का उपहार दिया।
आसमान में पक्षी बन उड़ना था जिसको,
प्यार के नाम पर उसके पंखों को काट दिया।
ये रक्षा बंधन है या ज़िंदगी का बंधन ?
आने-जाने पे बंदिशें
पहनने-ओढ़ने पे बंदिशें
सपने देखने पे बंदिशें
ज़िन्दगी जीने पे बंदिशें
ये रक्षा बंधन है या ज़िन्दगी का बंधन ?

• वंशिका, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

मैं एक आज़ाद परिंदा हूँ, मुझे आसमान में उड़ने दो।
जहाँ मैं चाहूँ, मुझे तुम मुड़ने दो।
जो मेरा मन करे, मुझे करने दो।
मैं एक आज़ाद परिंदा हूँ, मुझे आसमान में उड़ने दो।

• उरूज, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

बंधन नहीं, बराबरी

अगर मुझे मौका मिले तो मैं आज़ादी के दिन सबको आज़ाद कर दूंगा और रक्षा बंधन के दिन बहन और भाई दोनों से राखी बँधवाउंगा। हम अपने जीवन में स्वतंत्रता एक साथ मिलकर ला सकते हैं– साथ मिलकर घर और बाहर दोनों का काम कर के।

• अज्जू, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, साउथ दिल्ली

मैं भी चाहूँ बराबर प्यार

पुत्र जन्म में बंटी बधाई
जन्म लिया जब मैंने मैय्या, क्यों आँख तेरी भर आई?
शिक्षा का अधिकार छिना और पाबंदी हिस्से आई।
खुशियों को जब मार जिया, तब तेरी बिटिया कहलाई।
भाई को तो कभी किसी ने रोक न इतनी लगाई,
क्यों भेदभाव और रोक-टोक सब मेरे हिस्से आई ?
मैं भी तो उसी कोख से हूँ आई।
बस मांग रही हूँ एक उपहार,
ओ मैय्या, मुझको भी दे दो समानता का अधिकार।

• कौशल्या, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

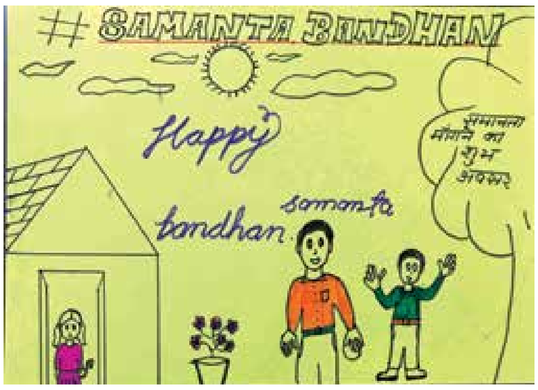

क्या हम सच-मुच आज़ाद हैं?

हम स्वतंत्र तब होंगे जब अमीर से लेकर गरीब, प्रत्येक नागरिक विकास का लाभ उठा सके। जिस ज़मीन पर हम पैदा हुए हैं, आज वही हमसे छीनी जा रही है। जिस सरकार को हमारी रक्षा करनी चाहिए, जब वही सरकार हमे किनारे ढकेल दे तो हम कहां जाएंगे? अगर हम शांति से अपने देश में नहीं रह सकते तो हमें क्या आज़ादी है? ऐसे में मेट्रो रेल और बड़े–बड़े फ्लाईओवर बनाने का क्या फायदा? क्या शहर सिर्फ अमीरों के लिए है? क्या यह हम गरीबों के लिए नहीं है? क्या हम सच–मुच आज़ाद हैं?

• पवित्रा, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

हम सब एक हैं

समानता के बंधन को हम मिलकर निभाएंगे,
बराबर हम सब हो जाएंगे।
हर रिश्ता मज़बूत करते जाएंगे,
महिला, पुरुष, ट्रांसजेंडर मिलकर धरती को स्वर्ग बनाएंगे।
चहकते-महकते बराबरी के गीत गाएंगे,
खुशियाँ बांटकर आज़ादी का जश्न मनाएंगे।
सब को प्यार-महनत सिखाएंगे,
हम समानता का बंधन मिलकर निभाएंगे!

• रवि, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, जयपुर

कैसा होगा अगर रक्षा बंधन के दिन भाई और बहन दोनों एक–दूसरे को राखी बांधें और एक दूसरे की रक्षा करने का वादा करें?

• हिमांशु, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, साउथ दिल्ली

मैं हूँ स्वयं की रक्षक

मुझे लगता है कि रक्षा बंधन का मतलब है एक–दूसरे से जुड़े रहना– यह कोई भी हो सकता है–पुरुष या महिला। एक आम मिथक है कि बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं ताकि भाई उनकी रक्षा कर सकें। तो क्या वो लड़की जिसका कोई भाई नहीं है, सुरक्षित नहीं है?

मेरा कोई भाई नहीं है और मैंने कभी किसी को राखी नहीं बांधी। लेकिन मैं अपनी रक्षा करने में सक्षम हूं। मैं नहीं मानती कि कोई मेरा रक्षक बन सकता है। मैं आज़ादी से जीने में, और समान अधिकारों का आनंद लेने में विश्वास रखती हूँ।

• अर्चना मुंडा, सखा ड्राइवर, कोलकाता

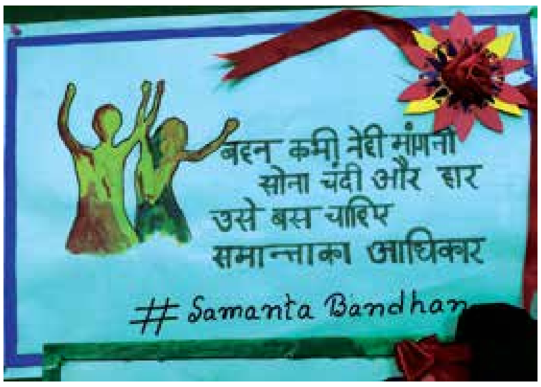

ये समय है सोच बदलने का...

रक्षा बंधन एक बंधन है जिसे हम हमेशा से निभाते आ रहे हैं। इसमें भाइयों को रक्षक का दर्जा दिया जाता है और कहा जाता है कि रक्षा भाई ही करेगा। यह रक्षा बंधन नहीं ज़िन्दगी का बंधन है क्योंकि इसमें हम आज़ादी से कुछ भी नहीं कर सकते। इसलिए, हमे समानता बंधन मनाने की ज़रूरत है जिसमें घर के पुरुषों और महिलाओं को समान दर्जा दिया जाए। जिसमे महिला और पुरुष दोनों ही खुद की ज़िन्दगी का निर्णय खुद ले सकें। उसमें कोई रोक–टोक न हो।

• रेखा, कल्पना, प्रीती, रितिका, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ दिल्ली

मैं आज़ादी हूँ

मैं, आज़ादी, एक संकल्प हूँ। जिसमें देश व समाज को एकजुट करने की शक्ति है। मैं एक उड़ता परिंदा हूँ। जिसमे एक ऊर्जा है संकल्प और विचार की। मैं आज़ादी हूँ, मुझमें असीमित स्वतंत्रता है। मैं एक ऊर्जा का संकल्प हूँ, मैं आज़ादी हूँ।

• लवखुश, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, नार्थ दिल्ली

किशोरियां

हम किशोरियों को अपनी रक्षा खुद करनी होगी और हमें रक्षा बंधन को समानता के बंधन में बदलना होगा। ताकि, हम अपनी रक्षा खुद कर पाएं और इसके लिए किसी और की ज़रूरत न पड़े।

• दृष्टि, आज़ाद किशोरी लीडर, साउथ दिल्ली

समान अधिकार के हक़दार

समानता बंधन को मनाने का मतलब है कि हमारे घर में लड़की और लड़के के बीच भेद भाव बंद हो और दोनों को एक समान प्यार दिया जाए। जिस प्रकार लड़कों को हर क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाता है, उसी प्रकार लड़कियों का भी घर वाले साथ दें, उन्हें आगे बढ़ने दें। उन्हें यह नहीं कहें कि तुझे तो आगे जा कर चूल्हा ही संभालना है। उन्हें भी पहनने की, खाने की, पढ़ने की, अपनी पसंद की नौकरी करने की आज़ादी दें। तभी सही मायनो में हम आज़ादी व समानता ला पाएंगे।

• संतोष, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

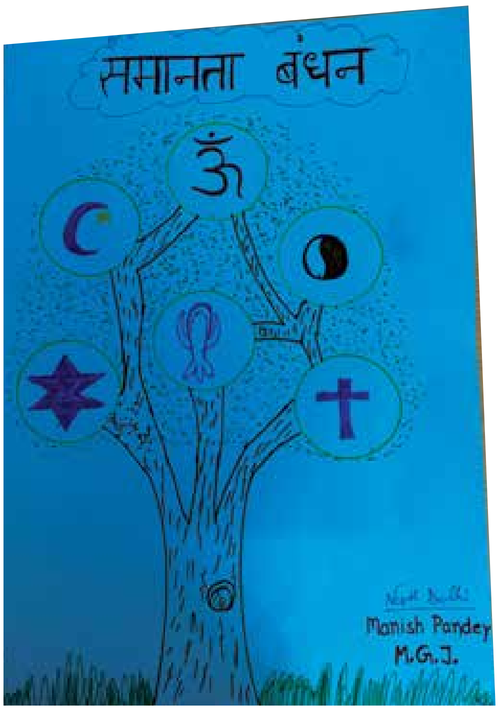

मनीष पांडे, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, नार्थ दिल्ली

राजकुमारी, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

बदलूंगी अपनी दास्ताँ

झूट है ये पितृसत्ता, झूट है ये रूढ़ियाँ
समय के साथ सोच बदल,
दुनिया के साथ-साथ चल।

बेटा-बेटी में भेदभाव किया,
मेरे हक़ की समानता है कहाँ?
जब संविधान ने मुझे समानता का हक़ दिया,
तो तुमने मुझसे वो अवसर क्यों छीन लिया?

मैं चाहती हूँ शिक्षा के अवसर कई,
ताकि छू सकूँ आकाश की बुलंदियां
इन बेड़ियों को तोड़ कर एक दिन,
बदल दूंगी मैं अपनी दास्ताँ।

• आशा, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

मेरी कुछ ख्वाहिशों के पंख टूटे हैं तो क्या,
औरों के संग उड़ना छोड़ दूँ ?

• गीतांजलि, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

कीर्ति, आज़ाद किशोरी, नार्थ दिल्ली

हिंसा के खिलाफ लड़ाई

मैं स्वतंत्र हूँ पर मेरे जीवन पर मेरे पति का नियंत्रण था। मुझे अपने पिता या पति के अनुसार कई फैसले लेने पड़े। पिछले साल मैंने घरेलू हिंसा के चलते अपने पति से तलाक ले लिया। बहुत मुसीबतों का सामना करने के बाद भी मैं अपने फैसले पर अड़ी रही। ट्रेनिंग की वजह से मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है और तभी मैं अपने सारे डरों को दूर करने में सक्षम हुई हूँ। अब मैं किसी के प्रति जवाबदेह नहीं हूं और मेरे लिए आजादी का मतलब अपना फैसला खुद लेना है।

• ऋतूपर्णा मंडल, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ कोलकाता

अधिकार मिलते नहीं, लिए जाते हैं।
आज़ाद हैं, मगर गुलाम किये जाते हैं।
स्मरण करो उन सैनानियों का जो
मौत को आंचल में लिए जाते हैं।

• सोनम, टीना, शिवानी, दीप्ती, वीमेन विद व्हील्स ट्रैनी, नार्थ दिल्ली

मेरा जॉब है मेरी आज़ादी का जश्न...

मैं सखा की ड्राइवर हूँ और मैं आज़ाद हूँ। आज़ादी से मेरा मतलब है मैं अपने फैसले खुद लेती हूँ। मुझे बाहर आने–जाने में कोई दिक़्क़त नहीं होती, मैं कभी भी कहीं भी जा सकती हूँ। जैसे कि मैं नाईट में अपनी जॉब पर अकेली चली जाती हूँ और अगर किसी को मदद की ज़रूरत पड़े तो मैं उसकी मदद बिना किसी परेशानी के कर सकती हूँ।

मैं अपने बच्चों को भी आज़ादी के बारे में बताती हूँ कि हम एक आज़ाद भारत में रहते हैं और अपनी मर्ज़ी से जी सकते है। मैं अपनी आज़ादी का जश्न जॉब होने से खुश होकर मनाती हूँ। मैं जो काम करती हूँ उसके पैसे मिलते हैं और उनसे मैं अपना और अपने बच्चों का पालन पोषण करती हूँ। यही मेरे लिए आज़ादी का जश्न है।

• अनीता कुमारी, सखा ड्राइवर, साउथ दिल्ली

राशेदा, वीमेन विद व्हील ट्रेनी, नार्थ कोलकाता

आकाश की ऊँचाइयों को छू जाएंगे...

मन को न अब हम दबाएंगे
अपने ही सपने जगाएंगे।
तोड़ के सारे बंधन घरवालों के,
पक्षी की तरह उड़ जाएंगे।
महनत करेंगे इतनी कि अपना नाम
अख़बार में छपवाएंगे।
तोड़के पुराने रीति रिवाज़ों को,
अपनी भावनाओं के साथ नए त्यौहार बनाएंगें।
दुनिया को बदलने से पहले बदलाव खुद में लाएंगे।
जितना दबाया है दुनिया ने,
उतनी ही ऊंचाईयाँ छू जाएंगें।

• सिमरन, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ दिल्ली

चढ़ूँ जीवन की सीढ़ी, मगर अपनी शर्तों पर

मैं अपनी ज़िन्दगी में यह आज़ादी चाहती हूँ कि मैं जिस दिन पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर हो जाऊं, उसके बाद ही मैं शादी के रिश्ते में बांधी जाऊं। शायद ऐसा करने से मेरा नाम घरेलू हिंसा से पीडित महिलाओं में से न हो।

• काजल, फेमिनिस्ट लीडर, ईस्ट दिल्ली

हम आज़ाद परिंदे बनना चाहते हैं

हम आज़ाद किशोरियां, आज़ाद से जुड़ने के बाद अपने घर और समाज में अपने अधिकार के लिए लड़ पाते हैं। हमने अपने घरों में समानता बंधन मनाना शुरू किया। समानता बंधन का मतलब यह नहीं है कि हम अपने भाई को और बाप को ही सम्मान दे बल्कि, हम हर एक इंसान को उसका हर एक अधिकार दें। चाहे वो पुरुष हो या महिला, युवा हो या वृद्ध। हम लड़कियां आज़ादी चाहती हैं– चाहे वो घर में रहने की हो या बाहर जाने की, छोटे कपडे पहनने की हो या मोबाइल चलाने की या जॉब करने की। हम अधिकार चाहते हैं, इसलिए हम आज़ाद परिंदे बनना चाहते हैं।

• फातिमा, आज़ाद किशोरी लीडर, साउथ दिल्ली

मोहिनी चौहान, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, साउथ दिल्ली

नारी, तुझे आगे बढ़ना है...

अँधेरी रात के बाद, नारी, तुझे आगे बढ़ना है
नई सुबह की रोशनी में तुझे उभारना है।
नारी, तू पुरुष के हाथ की कठपुतली नहीं,
तुझे आज़ाद पक्षी की तरह आकाश में उड़ना है।

अँधेरी रात के बाद, नारी, तुझे आगे बढ़ना है
अपनी इच्छाशक्ति और सहनशक्ति से
हर बंधन को पार करना है।
पुरुषों के नियंत्रित से लड़कर,
उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना है।

अँधेरी रात के बाद, नारी, तुझे आगे बढ़ना है
तुझे एक नई मुक्त दुनिया का आरम्भ करना है।

• प्रियंका सरकार, फेमिनिस्ट लीडर, साउथ कोलकाता

तू बोलेगी, मुँह खोलेगी तब ही तो ज़माना बदलेगा

मैं एक कहानी के माध्यम से आपको कुछ बताना चाहूंगी। एक बार की बात है एक लड़की होती है। वो पढ़ने में बहुत अच्छी तो नहीं, लेकिन अपने बड़े भाई से तो काफी अच्छी होती है। पर उनकी मम्मी सिर्फ उसके भाई को ही पढ़ने के लिए कहती है। अगर लडकी शाम को 7:00 या 8:00 बजे किताब लेकर बैठ जाए तो उसे मम्मी बोलती, "जा बेटी, रोटी बना दे" या "चाय बना दे"। बेटी ने बोला "मुझे पढ़ने दो," तो माँ का जवाब होता कि दिन भर क्या करती है जो शाम को ही पढ़ाई याद आती है। बेटी ने बहुत दिनों बाद कहा "मम्मी, आप हमेशा भैया को ही पढ़ने के लिए कहती हो। आप मुझे पढ़ाना नहीं चाहती? तो माँ का कहना था, "बेटी, तू बिन बोले पढ़ने जाती है। तेरे भाई को बोलना पड़ता है।" बेटी ने बोला कि इस कारण वो पढ़ने में कमज़ोर होती जा रही है। बहुत समझाने के बाद उसकी माँ ने कहा, "बेटी, तू पढ़ाई पर ध्यान दे, आगे से मैं तुझ पर ज़ोर नहीं डालूंगी।"

• जानकी सिंह, आज़ाद किशोरी लीडर, ईस्ट दिल्ली

गोपाल, मेन फॉर जेंडर जस्टिस लीडर, नार्थ दिल्ली

हम लेके रहेंगे आज़ादी।
हमको चाहिए आज़ादी।
मिलती नहीं जो आज़ादी।
अपनी मर्ज़ी की आज़ादी।
हमको चाहिए आज़ादी।

घूमने-फिरने की आज़ादी।
पढ़ने-लिखने की आज़ादी।
आने-जाने की आज़ादी।
फैसले लेने की आज़ादी।
मर्ज़ी से रहने की आज़ादी।
हमको चाहिए आज़ादी।

चुनने की आज़ादी।
कुछ कर दिखाने की आज़ादी।
सम्मान से जीने की आज़ादी।
हम लेके रहेंगे आज़ादी।

• वंशिका, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, नार्थ दिल्ली

आगाज़ कर दिया है, अब मुश्किल रुक पाना...

अपने अनुसार अपनी आजीविका को बिताना,
अपनी आकांक्षाओं को दूसरे के सामने व्यक्त कर पाना,
अपने सपनो को देखने तथा पूरा करने में सक्षम हो पाना,
पितृसत्ता की बंदिशों से मुक्ति पाना,
यही है सच्ची आज़ादी को पाना।
मेरे जीवन में थे ऐसे ढेर सारे नियम-कायदे,
जिन्हे अपनी इच्छाओं के विरुद्ध मैंने अब तक था माना-
नौकरी न करना, कम बोलना, छोटे कपडे न पहनना,
घूमने न जाना व लड़कों से बात न करना।
लेकिन, अब शुरू कर दिया है मैंने इन बंधनो को ठुकराना
ज़्यादा बोलती हूँ, अकेले दूर आना-जाना भी करती हूँ,
नौकरी करने की भी अब पूरी है तैयारी।

• पूनम भलस्वा, फेमिनिस्ट लीडर, नार्थ दिल्ली

दिव्या, आज़ाद किशोरी लीडर, नार्थ दिल्ली

हम एक दिन आज़ाद हो जाएंगी

अगर एक औरत दूसरी औरत का साथ दे, उसे उन बंधनो में ना बांधे जिन बंधनो में रहकर उसने अपना जीवन जी नहीं पाया। जिस दिन वो अपनी बेटी और बहुओं को वो जीवन दे जो जीवन वो खुद जीना चाहती थी, समझो उस दिन हम आज़ाद हो जाएंगी।

समय से साथ उसे अच्छी माँ या सास बनने का मौका मिले तो वो इसका लाभ खुद भी उठाये और दूसरी औरत को भी उठाने में मदद करे। जिस दिन एक औरत दूसरी औरत की सच्ची सहेली बन जाएगी, समझो हम आज़ाद हो जाएंगी। जिस दिन एक पिता के साथ बेटी का रिश्ता माँ के बराबर का बन जाएगा, समझो हम आज़ाद हो जाएंगी।

जिस दिन भाई–भाई से ज़्यादा दोस्त बन जाएगें, समझो हम आज़ाद हो जाएंगी।

• सिया, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, जयपुर

हिंसा से आज़ादी

जब किसी लड़की के साथ छेड़छाड़ या हिंसा होती है तो हिंसा करने वालों को कड़ी सज़ा दी जानी चाहिए। हम आज़ादी का जश्न तभी मना सकते हैं जब लड़कियों को बिना किसी डर के जीने की पूरी आज़ादी हो।

• सुगन्या, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, चेन्नई

अपना घर...

मैं चाहती हूँ महिलाओं का अपना घर हो,
जिस पर उनका हक़ हो।
उनके काम का सम्मान हो,
उनकी भी अपनी एक पहचान हो।

हम औरतों ने घर का काम किया और बाहर का भी
हमने बच्चे संभाले और घरबार भी।
फिर क्यों इस समाज ने हमे सम्मान न दिया?
पुरुष ने एक काम किया तो दिखाया कि बहुत कुछ कर लिया।
हम महिलाओं को पुरुषों जैसा सम्मान क्यों न मिला?

मैं चाहती हूँ महिलाओं का अपना घर हो,
जिस पर उनका हक़ हो।
उनके काम का सम्मान हो,
उनकी भी अपनी एक पहचान हो।

• सोनिया, वीमेन विद व्हील्स ट्रेनी, ईस्ट दिल्ली

करने हैं सपने साकार
न रहूंगी बंद पिंजरे में
आज़ाद होकर घूमूंगी
डर की हदें पार कर
अधिकार के लिए लडूंगी।
अब नहीं मानूंगी हार,
कर दिखाउंगी अपने सपने साकार।
डर कर कुछ नहीं होना है,
अपने सपनो को नहीं खोना है।
करने हैं सपने साकार
अब नहीं मानूंगी हार।

• अनामिका, आज़ाद किशोरी, ईस्ट दिल्ली

अलशिफा, आज़ाद किशोरी लीडर, नार्थ दिल्ली

घर का काम सब का काम

मई 2022 में, अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस के अवसर पर, आज़ाद ने फेम नेटवर्क और गैर–पारंपरिक आजीविका नेटवर्क के सहयोग से एक राष्ट्रीय अभियान शुरू किया, जिसका उद्देश्य महिलाओं द्वारा किए जाने वाले अवैतनिक देखभाल कार्य के परिप्रेक्ष्य को बदलना था। महिलाओं के 'काम' की पहचान सुनिश्चित करने और अवैतनिक देखभाल और घर के कामों में पुरुषों और लड़कों की भागीदारी बढ़ाने के लिए कई रचनात्मक गतिविधियों जैसे वॉल पेंटिंग, पपेट शो, पॉडकास्ट, रैली, नुक्कड़ नाटक, आदि द्वारा समुदाय और सोशल मीडिया पर यह अभियान चलाया गया।

समानता बंधन

साल 2020 में आज़ाद फाउंडेशन ने रक्षा बंधन के भारतीय त्यौहार को एक नए रूप से मनाने की पहल की। तब से ही हम अपने युवा और फेमिनिस्ट लीडर्स, ट्रेनीस और ड्राइवर्स और समुदाय के साथ

समानता बंधन अभियान मनाते आये हैं, जहाँ पुरुष अपनी बहनों की रक्षा का वादा करने के बजाए उनकी आज़ादी और हिंसा मुक्त जीवन जीने की लड़ाई में साथ देने का वादा करते हैं। इस अभियान के दौरान हम अपने संवैधानिक मूल्यों पर फिर से विचार करते हैं, और प्रतिबंधों, नियंत्रण और हिंसा से स्वतंत्र समाज का निर्माण करने की ओर बढ़ने का संकल्प लेते हैं।

दिल्ली राइड्स विद हर

साल 2014 से आज़ाद महिलाओं को बस चालक के रूप में शामिल करने के लिए दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के साथ पैरवी कर रहा है। दिल्ली की पहली महिला बस चालक, वी सरिता ने आज़ाद द्वारा ट्रेनिंग प्राप्त की और 2015 में डीटीसी में उन्हें शामिल किया गया। 10 अन्य लाइट मोटर व्हीकल ड्राइवर्स जिन्होंने आवेदन किया वो डीटीसी के ऊंचाई मानदंड को पूरा नहीं कर पाई।

2014 और 2022 के बीच आज़ाद ने लगातार डीटीसी के साथ जुड़कर परिवहन क्षेत्र में प्रवेश करने में महिलाओं के सामने आने वाली बाधाओं पर प्रकाश डाला। 2022 में एक अच्छी खबर हमारे सामने आई जब परिवहन मंत्री ने डीटीसी में अधिक महिलाओं को शामिल करने के लिए मानदंडों में ढील देने की घोषणा की। इसके बाद से, आज़ाद से कुल 13 महिलाएं अपनी ट्रेनिंग ख़तम कर डीटीसी में बस चालक के रूप में नियुक्त कर ली गयीं हैं।

इसका असर और भी जगह देखने को मिला जब आज़ाद से प्रशिक्षण प्राप्त चार महिलाएं बस ड्राइवर के रूप में दिल्ली पब्लिक स्कूल द्वारा नियुक्त की गईं।

पब्लिक ट्रांसपोर्ट में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाएगी दिल्ली सरकार

महिला बस ड्राइवरों के लिए योग्यता शर्तों में बदलाव

ट्रेनिंग का भुगतान भी सरकार करेगी

पाठकों के लिए विशेष सूचना: आप में से जो भी इस न्यूज़लेटर के लिए लिखना चाहते हैं, अपनी कहानी, कोई रोचक अनुभव, सन्देश या ख़ास खबर, चित्र, फोटो, शेर–ओ–शायरी, गीत–चुटकुला, विचार या चिंताएं सबके साथ बांटना चाहते हैं तो नीचे दिए पते पर संपर्क करें।

संपादक: रुबीना अज़ीज और शिखा डिमरी

अन्य सहयोगी: अरीबा जमील और अनामित्रा मुख़र्जी

आर–10, फ्लैट नं. 7, दूसरी मंज़िल, नेहरू एन्क्लेव, कालका जी,
नई दिल्ली–110019
फोन : 011.49053796 • वेबसाइट : www.azadfoundation.com

www.azadfoundation.com | @azadfoundationIndia
@azadfoundationIndia | @FoundationAzad

-: डिस्क्लेमर :-

आज़ाद फाउण्डेशन और सखा दो अलग-अलग संस्थाएँ हैं।
आज़ाद एक एन.जी.ओ. है और सखा एक प्राइवेट लिमिटेड कंपनी।

पहली बार 11 महिलाएं संभालेंगी डीटीसी की बसों के स्टीयरिंग

परिवहन मंत्री ने महिलाओं को सौंपे नियुक्ति पत्र

अमर उजाला ब्यूरो

नई दिल्ली। दो माह की ट्रेनिंग के बाद बुधवार से 11 महिलाएं राजघाट डिपो से बसों को लेकर कई मार्गों के लिए रवाना होंगी। महिला चालकों के पहले बैच का प्रशिक्षण पूरा होने पर परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने सभी को नियुक्ति पत्र सौंपने के बाद बधाइयां दीं। उन्होंने कहा कि इस पहल से महिलाओं के सशक्तिकरण के साथ साथ उनके लिए रोजगार संभावनाएं भी बढ़ेंगी। अगले कुछ महीनों में 200 महिला चालकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

राजघाट डिपो पहुंचने के बाद परिवहन मंत्री ने संवाददाताओं को बताया कि यह महिला चालकों का पहला बैच है। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें डिपो के साथ साथ अनुभवी चालकों के साथ सड़कों पर भी ड्राइविंग का मौका दिया गया। फिलहाल 10 और महिलाएं ट्रेनिंग ले रही हैं।

महिला चालक कोमल चौधरी

दिल्ली की ट्रैफिक में बस चलाने का मिला अच्छा अनुभव : बबीता धवन, कोमल चौधरी, नीतू, संतोष, भारती, दीपक, शर्मिला सहित सभी 11 महिला चालकों ने अनुभव साझा करते हुए कहा कि दूसरे शहरों की तुलना में दिल्ली में वाहनों का अधिक बोझ है। ट्रेनिंग के दौरान सभी पहलुओं पर जानकारी देने सहित बस चलाने का अनुभव हासिल किया।

80 फीसदी से अधिक हरियाणा की निवासी

11 महिला चालकों में 80 फीसदी से अधिक हरियाणा की रहने वाली हैं। शर्मिला ने राजघाट डिपो में बस चलाने के बाद कहा कि पहले से ड्राइविंग करती रही हूं। चरखी दादरी की भारती ने मुझे खेतों में ट्रैक्टर सहित कई वाहनों को चलाने का अनुभव है। नीतू ने कहा कि सड़कों पर सुरक्षा हमेशा प्राथमिकता रहेगी। [illegible] ने कहा कि मैं 13 वर्ष की उम्र से ड्राइविंग कर रही हूं।

आज से 100 और ई-बसें दौड़ेंगी

नई दिल्ली। यात्रियों की सहूलियत और बसों की कमी दूर करने के लिए बुधवार को एक बार फिर दिल्ली की सड़कों पर 100 इलेक्ट्रिक बसें उतारी जाएंगी। पैनिक बटन, सीसीटीवी कैमरे, जीपीएस, महिलाओं के लिए अलग सीट और दिव्यांगों के लिए विशेष सुविधाओं से युक्त बसें राजघाट डिपो से अलग अलग मार्गों पर रवाना होंगी। दिल्ली के परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा कि 100 लो फ्लोर एसी इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतारी जाएंगी। इससे कई रूट पर सफर करने वाले यात्रियों को काफी राहत होगी। इससे पहले दिल्ली में 150 ई- बसें यात्रियों को सेवाएं मुहैया करा रही हैं। 100 और नई बसों के दिल्ली के परिवहन बेड़े में शामिल होने से इसकी संख्या बढ़कर करीब 250 हो जाएगी। ब्यूरो